कीर्ति श्रीवास्तव

मैं भी पढ़ूँगा

आज पूरा बसंत वन बसंती रंग से सजा हुआ था। वन में बसंती फूलों की बहार आई हुई थी। सभी जानवर भी बसंती रंग के कपड़ों में दिख रहे थे। बसंत वन आस-पास के जंगलों में इस बात के लिए मशहूर था कि वहाँ के सभी जानवर मिलजुल कर सभी धर्मों के त्यौहार मनाते थे। आज भी सभी जानवर बसंत पंचमी मनाने जा रहे थे। राजा शेर ने सभी को अपने महल में बुलाया था।

चकोरी चिडिया: पीलू बंदर पीले सूट में तो जच रहे हो। कब चलोगे राजा शेर के महल? पीलू बंदर: बस सभी को आ जाने दो फिर निकलते हैं। तुम्हारी साड़ी भी सुन्दर लग रही है। चकोरी चिडिया: धन्यवाद।

देखते ही देखते गोलू हाथी, टिंकू खरगोश, सुन्दर मोर, पिंकू जिराफ के साथ और भी जानवर एकत्रित हो जाते हैं। सभी राजा शेर के महल पहुँचते हैं।

वहाँ जाकर देखते हैं कि राजा शेर का पूरा महल बसंती फूलों से सजा हुआ है। एक कोने में ऊँचे पत्थर पर माँ सरस्वती जी की मूर्ति रखी है। तभी राजा शेर भी आ जाता है।

सुन्दर मोर: राजा शेर, पूजा कब होगी माँ सारस्वती जी की?

राजा शेर: हमारे विद्यालय के शिक्षक चमन लोमड़ी को भी आ जाने दो फिर शुरू करते हैं। सुन्दर मोर: जी। तभी शिक्षक चमन लोमड़ी भी आ जाते हैं।

टिंकू खरगोश: लो शिक्षक चमन लोमड़ी भी आ गए। अब तो शुरू करें। मुझे बहुत जोरों की भूख लग रही है।

शिक्षक चमन लोमड़ी: हाँ, तुम्हें तो बस खाना और खेलना। यही दिखता रहता है। पढ़ाई में तो मन लगता नहीं है। राजा शेर: शिक्षक चमन लोमड़ी आज जाने दीजिए। सबको मन का करने दें।

शिक्षक चमन लोमड़ी: जैसा आप ठीक समझे। राजा शेर और शिक्षक चमन लोमड़ी के साथ सभी लोग माँ सरस्वती जी की पूजा करते हैं। उन्हें टीका लगाते हैं। फूल चढ़ाते हैं। मिठाई का भोग लगाते हैं। पिंकू जिराफ: राजा शेर, आप हर वर्ष बसंत पंचमी पर माँ सरस्वती जी की पूजा क्यों करते हैं?

टिंकू खरगोश: अरे पिंकू जिराफ, तुम्हें क्या करना है कि क्यों पूजा करते हैं। अरे पूजा हो गई। अब खाना खाते हैं।
राजा शेर: टिंकू खरगोश थोड़ा रुको। खाते हैं खाना। पहले पिंकू जिराफ की बात का जवाब तो दे दूँ।टिंकू खरगोश: ठीक है राजा शेर।
राजा शेर: आप सब भी सुने। जब मैं छोटा था, मेरा पढ़ाई में बिल्कुल मन नहीं लगता था। सभी परेशान रहते थे। एक बार मैं अपनी मौसी के यहाँ गया। उस दिन बसंत पंचमी थी। मौसी का लडक़ा लल्लन शेर मुझे अपने साथ अपने स्कूल ले गया। वहाँ माँ सरस्वती जी की पूजा हो रही थी। पूजा होने के बाद मास्टर भालू ने वहाँ सभी को माँ सरस्वती के जन्म और पूजा का महत्व बतलाया।

उन्होने बताया कि पुरानी मान्यता के अनुसार, एक बार ब्रह्मा जी संसार के भ्रमण पर निकले। उन्होंने जब सारे ब्रह्माण्ड को देखा तो सारा ब्रह्माण्ड खामोश था। तब उन्हें लगा कि संसार की रचना में कुछ कमी रह गई है। इसके बाद ब्रह्मा जी ने अपने कमण्डल से थोड़ा जल निकालकर छिडक़ दिया। तो एक महान ज्योतिपुंज में से ज्ञान और विद्या की देवी सरस्वती जी प्रकट हुईं। जिनके हाथों में पुस्तक, वीणा और कमल था और चेहरे पर तेज था। उन्होंने ब्रह्मा जी को प्रणाम किया। माँ सरस्वती जी के अवतरण दिवस के रूप में बसंत पंचमी का पर्व मनाया जाता है। ब्रह्मा जी ने सरस्वती जी से कहा कि इस संसार में सभी लोग खामोश हैं। इनमें आपसी संवाद नहीं है। आपको अपनी वीणा की मदद से इनमें ध्वनि प्रदान करनी है। ताकि ये लोग आपस में बातचीत कर सकें। एक-दूसरे की तकलीफ को समझ सकें। इसके बाद माँ सरस्वती ने सभी को आवाज प्रदान की। देवी के वीणावादन से सृष्टि को स्वर मिला, वाणी मिली, विद्या मिली, बुद्धि मिली। मास्टर भालू ने बताया कि माँ सरस्वती जी की पूजा करने से हमें बुद्धि की प्राप्ती होती है। जिससे हमारा मन पढ़ाई में लगता है। हमारी पढऩे की इच्छा शक्ति बढ़ती है। माँ सरस्वती जी का पूजन हम सभी को करना चाहिए।

यह सब सुनने के बाद मैंने निश्चय किया कि मैं भी हर वर्ष माँ सरस्वती जी की पूजा करूँगा और खूब पढ़ूँगा।
गोलू हाथी: तो क्या आपने खूब पढ़ाई की।
राजा शेर: हाँ, खूब पढ़ा। कक्षा में पहले स्थान पर आने लगा था। देखो आज मैं बसंत वन का राजा हूँ।
यह सुनकर सभी ने जोरदार तालियाँ बजाईं किंतु टिंकू खरगोश कुछ सोच रहा था।
शिक्षक चमन लोमड़ी: टिंकू खरगोश, तुम क्या सोच रहे हो?

टिंकू खरगोश: शिक्षक चमन लोमड़ी जी मैं आज आपसे वादा करता हूँ कि मैं भी खूब पढ़ूँगा। आपका और इस वन का नाम रोशन करूँगा।
टिंकू खरगोश की बात सुनकर सभी जानवरों ने एक बार फिर जोरदार तालियाँ बजाईं।
राजा शेर: शाबाश टिंकू खरगोश। चलो तो इसी बात पर हम सब मिलकर खाना खाते हैं।
सभी खाना खाने चल देते हैं। वहीं राजा शेर और शिक्षक चमन लोमड़ी एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराते हैं। क्योंकि कुछ दिन पहले ही शिक्षक चमन लोमड़ी टिंकू खरगोश के ना पढऩे की शिकायत लेकर राजा शेर के पास आए थे। तब राजा शेर ने ही इस कहानी के साथ माँ सरस्वती जी के पूजन की बात करने की योजना बनाई थी जो आज सफल हो गई।